HISTORY

B.A.PART-II (Subs)

Paper-II (Mugal period)

Unit-II, (Early Life and Conquest of Shershah)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 34

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को CLICK करें ☐☐☐।

https://youtu.be/lEc_a9lFHpo

"शेरशाह का प्रारंभिक जीवन एवं विजयें"

(Early life and Conquest of Shershah)

Dr. Guddy Kumari (A.N.D College)

अफगान जाति स्वभाव से क्रूर एवं स्वतंत्रता प्रेमी थे। अफगान जाति बाबर के द्वारा पानीपत एवं घाघरा के युद्ध में पराजित होने पर भी हिम्मत नहीं हारी। वे धैर्य पूर्वक अवसर एवं नेतृत्व का बाट जो रहे थे। जब संयोग से शेर खान जैसे योग्य सेनानायक का उदय हुआ तो देश में बिखरे हुए असंतुष्ट अफगान उसके झंडे के नीचे आ गए और शेर खा हुमायूं को निर्वासित कर पुनः भारतवर्ष में अफगान सत्ता स्थापित कर सूरी साम्राज्य की स्थापना करने में सफल हुआ।

शेर खा का प्रारंभिक जीवन...

शेरखा का बचपन का नाम फरीद खा था। उसके पिता का नाम हसन खा था। हसन खा ने कई शादियां की थी, लेकिन हसन खा के अफगान पत्नी से शेर खान का जन्म 1486 ईस्वी में हिसार फिरोज (नारनौल) नामक स्थान में हुआ था। आगे चलकर शेर खां घर परिवार से असंतुष्ट होकर जौनपुर चला गया। यह उसके लिए वरदान साबित हुआ क्योंकि जौनपुर विद्या का केंद्र था, वहां जाकर शेर खा अरबी फारसी एवं अन्य भाषाओं का विद्वान बन गया। एक बार बचपन में फरीद खान ने शिकार खेलते हुए एक शेर को मार डाला जिससे उसका नाम शेर खा पड़ा।

शेर खा ने अपने जीवन में अनेक उतार–चढ़ाव देखे, आगे चलकर उसने अपने साहस का परिचय देते हुए जलाल खा को भगाकर दक्षिण बिहार का शासक बन बैठा। शेर खां ने हजरत ए आला की उपाधि धारण कर राज्य काज चलाने लगा। बिहार का दायित्व संभालने के बाद उसके भाग्य का सितारा चमक उठा। उसने 1530 ई में चुनार दुर्ग के शासक तेज खा की विधवा लाडमलिक से शादी किया। इससे उसको चुनार का दुर्ग एवं बहुत सारी संपत्ति प्राप्त हुआ। उसके बाद शेर खा ने गाजीपुर के नासिर खान नूहानी की विधवा पत्नी गौहर एवं बीबी फतेह मल्लिका से शादी करने पर शेर खा को बहुत सी संपत्ति प्राप्त हुई, जिससे उसने सैनिक संगठन सुदृढ़ कर अपने कामयाबी को हासिल किया।

शेरशाह की प्रारंभिक के विजयें...

✓शेरशाह का हुमायूं के साथ का पहला संघर्ष....

चुनार के दुर्ग, जो शेर खा के अधिकार में था, पर 1531 ई में हुमायूं ने आक्रमण कर किले की चार माह तक घेराबंदी की। जब शेर खा को असफलता नजर आने लगी। तब उसने अपनी बुद्धिमानी का परिचय देते हुए हुमायूं से संधि कर ली। जब हुमायूं चुनार का दुर्गा शेर खा के ही हाथों में सौंप कर काल्पनिक सुरक्षा की नींद सो रहा था, तब शेर खा ने धक्के से पुनः शक्ति प्राप्त कर ली। यहीं से दोनों के बीच आजन्म शत्रुता का बीज बोया गया।

✓बंगाल, बिहार एवं सूरजगढ़ पर अधिकार..

1533 ई में सुल्तान महमूद शाह ने शेरशाह पर आक्रमण किया। इस युद्ध में बंगाल सेना शेर खा के हाथों पराजित हुई। इस विजय से शेर खा को सूरजगढ़ का क्षेत्र एवं बहुत सारा लूट का माल प्राप्त हुआ। पुनः 1535 ई में शेर खां एवं बंगाल के सैनिक का मुंगेर के पास सूरजगढ़ के मैदान में युद्ध हुआ। इस युद्ध में शेर खां विजय हुआ। यह युद्ध भारतीय इतिहास के निर्णायक युद्ध में सबसे महत्वपूर्ण था। 1537 ई में शेर खा ने तीसरी बार बंगाल पर आक्रमण कर गौर पर अधिकार कर बंगाल एवं बिहार का एकछत्र शासक बन गया।

✓रोहतास का पूरा अधिकार

शेर खां ने रोहतास के शासक चिंतामणि से विश्वासघात कर रोहतास के किले पर अधिकार कर लिया। शेर खा रोहतास पर अधिकार करने वाला पहला मुस्लिम शासक था।

✓चुनार और गौड़ पर हुमायूं का आक्रमण...

बिहार और बंगाल में शेर खां की प्रगति का समाचार पाकर हुमायूं की चिंता बढ़ी। इधर शेर खां गौर और रोहतास पर अधिकार कर अपनी शक्ति बढ़ा ली। हुमायूं ने सबसे पहले चुनार के दुर्ग पर आक्रमण किया और 6 महीने के बाद दुर्ग पर मुगलों का अधिकार हो गया। चुनार विजय के बाद हुमायूं शेर खा के साथ समझौता करने की बात सोच रहा था। वह शेर खा को अपनी अधीनता स्वीकार करने के बदले बंगाल और गौड़ का मालिक बनना चाहता था। बदले में शेर खां उसे ₹1000000 वार्षिक कर देना मंजूर कर लिया था, परंतु जब बंगाल के महमूद शाह का दूत हुमायूं के पास सैनिक सहायता के लिए पहुंचा और वस्तुस्थिति की जानकारी दी तो उसने शेर खां के साथ समझौता अस्वीकार कर गौड़ पर आक्रमण करने का निश्चय किया। गौड़ विजय करने में हुमायूं को विशेष कठिनाई नहीं हुई किंतु विजय के बाद 8 महीने गौड़ में रह कर अपनी शक्ति और समय का दुरुपयोग किया।

✓चौसा का युद्ध (25 जुन 1539)

Dr. Guddu Kumar (A.N.D College)

हुमायूं द्वारा गौड़ विजय से जो क्षति शेर खां को हुई थी उसने बिहार और जौनपुर को लूट कर पूरा कर लिया। 8 महीने की अवधि तक शेर खां ने बिना किसी बाधा के जौनपुर बनारस कन्नौज संभल आदि कई स्थानों पर अधिकार कर लिया। जब हुमायूं को शेर खा की प्रगति की सूचना मिली तब उसने गौड़ से बिहार की ओर प्रस्थान किया।

25 जून 1539 को चौसा के मैदान में हुमायूं एवं शेर खा के सेनाओं के बीच युद्ध हुआ। इस युद्ध में हुमायूं घायल होकर भाग गया एवं शेर खा विजयी हुआ। चौसा विजय के बाद शेर खा ने "शेर शाह" की उपाधि धारण की और अपना नाम सिक्कों पर अंकित करवाया। विजय के बाद वह साधारण सामंत से बढ़कर सम्राट बनने का स्वप्न देखने लगा।

✓कन्नौज या बिलग्राम का युद्ध.(17 मई 1540)

हुमायूं के कमजोरी का लाभ उठाकर शेर खा ने 17 मई 1540 ई. को मुगल सैनिकों पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में हुमायूं की हार हुई। उसे विवशता में दिल्ली एवं आगरा छोड़कर पूरे 15 वर्ष निर्वासित जीवन बिताना पड़ा, लेकिन कन्नौज विजय के बाद शेरशाह दिल्ली एवं आगरा पर अधिकार कर भारतवर्ष का सम्राट बन गया। इस प्रकार वह सूर वंश का दूसरा अफगान सम्राट था।

आगे भी यह जारी है.....

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!

Dr. Guddy Kumari (A.N.D College)